पडोसी छोकरा

मेरा नाम आशा है. मेरे पडोसी का लडका दसवी में पढता है. गोरा चिट्टा खुन्दर करीब मेरे बराबर लम्बा और दिखने में बहुत ही खुन्दर है. खास तौर पर उसके गुलाबी होंठ तो बहुत ही प्यारे हैं. दिल करता है कि इन्हें चबा ही लो. उसके पिता खाडी देश में काम करते हैं और मां सरकारी नौकरी में है. पडोसी होने के नाते हमारे परिवार में काफी घनिष्ठता है. जब भी उसकी मां काम काज के सिलसिले में बाहर टूर पर जाती है तो अमित हमारे ही घर में रहता है. हम दोनों में काफी गहरी दोस्ती है और वह मुझे दीदी कह कर बुलाता है.

ऐसे ही एक दफा वह हमारे साथ रह रहा था. संयोग से मेरे माता पिता को एक शादी के सिलसिले में बाहर जाना पडा. वे लोग करीब एक हफ्ते बाद लौटने वाले थे. हम दोनों ही घर में रह गए. डिनर के बाद हम दोनों ने कुछ देर तक तो टी वी देखा और फिर यूं ही कुछ देर इधर उधर की बातें कर के अपने अपने कमरे में सोने चले गए.

करीब एक आध घन्टे बाद प्यास लगने की वजह से मेरी नींद खुल गई. अपनी साईड टेबल पर बोतल को देखा तो खाली थी. मैं उठ कर किचन में पानी पीने गई तो लौटते समय देखा कि उसके कमरे की लाईट खुली हुई थी. . उसके कमरे का दरवाजा थोडा सा खुला हुआ था. मुझे लगा कि शायद वह सोते समय लाईट ऑफ करना भूल गया है मैं बन्द कर देती हूं. मैं दबे पांव लाईट ऑफ करने के लिए कमरे में दाखिल हुई लेकिन अन्दर का नजारा देख कर मैं हैरान हो गई.

अमित एक हाथ में पकड कर कोई किताब पढ रहा था और दूसरे हाथ से अपने तने हुए लन्ड को पकड कर मुठ मार

रहा था. मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी कि इतना मासूम सा लगने वाला यह दसवीं का छोकरा ऐसा भी कर सकता है. मैं दम साधे चुप चाप खडी उसकी हरकत देखती रही. लेकिन शायद उसे मेरी उपस्थिति का आभास हो गया. उसने मेरी तरफ मुंह फेरा और मुझे दरवाजे पर खडा देख कर चौंक गया. हतप्रभ होकर मुझे देखता रहा. वह कुछ भी बोल नहीं पाया. उसने अपना मुंह फेर कर किताब तकिए के नीचे छुपा दी. मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं. मेरे दिल में यह ख्याल आया कि कल से यह लडका मुझसे शरमाएगा और बात करने से भी कतराएगा. मुझे अपने दिन याद आए. मैं और मेरा कजिन भी तो तकरीबन इसी उम्र के थे जब से हमने सेक्स का मजा लेना शुरू किया था. तो इसमें कौन सी बडी बात है अगर यह मुठ मार रहा है.

मैं धीरे धीरे उसके पास गई और उसके कन्धों पर हाथ रख कर उसके पास ही पलंग पर बैठ गई. वह चुपचाप खामोशी के साथ लेटा रहा. मैंने उसके कन्धे को दबाते हुए कहा " अरे यार अगर यही करना था तो कम से कम दरवाजा तो बन्द कर लिया होता." वह कुछ नहीं बोला बस मुंह फेर कर लेटा रहा. मैंने जबरदस्ती दोनों हाथ से पकड कर उसका मुंह अपनी तरफ घुमाया और बोली "अभी से ये मजा लेना शुरू कर दिया. कोई बात नहीं मैं जाती हूं तू अपना मजा पूरा कर ले. लेकिन यह किताब तो दिखा" और मैंने तकिए के नीचे से वह किताब निकाल ली.

यह हिन्दी में लिखी मस्तराम की किताब थी. मेरा कजिन भी बहुत सी मस्तराम की किताबें लाता था और हम दोनों ही मजे लेने के लिए साथ साथ पढते थे. चोदाई के वक्त किताब के डायलॉग बोल बोल कर एक दूसरे का जोश बढाते थे. जब मैं किताब उसे वापस दे कर बाहर जाने के लिए उठी

तब जाकर वह पहली बार बोला "आरा मजा तो आपने खराब कर दिया. अब क्या मजा करूंगा".

"अरे अगर तुमने दरवाजा बन्द किया होता तो मैं आती ही नहीं."

"अगर आपने देख ही लिय था तो चुपचाप चली जाती."

अगर मैं बहस में जीतना चाहती तो आसानी से जीत सकती थी लेकिन मैं भी उसके साथ खेलना चाहती थी खास तौर पर उसके कुंवारे लौंडे और गुलाबी होठों से. इस लिए मैंने कहा "चल अगर मैंने तेरा मजा खराब किया है तो मैं ही तेरा मजा वापस कर देती हूं."

मैं फिर से पलंग पर बैठ गई और उसे चित्त लिटा और उसके मुरझाए हुए लन्ड को अपनी मुठ्ठी में बांधने की कोशिश करने लगी. उसने बचने की बहुत कोशिश की लेकिन मैंने फुर्ती से उसके लन्ड को हाथ में दबोच लिया. अब तक उसे यकीन हो गया था कि मैं उसका राज नहीं खोलूंगी इसलिए उसने अपनी टांगें खोल दीं ताकि मैं उसका लौंडा ठीक से पकड सकूं. मैंने उसके लन्ड को बहुत हिलाया लेकिन उसने खडे होने का नाम नहीं लिया. बडी मायूसी के साथ वो बोला " देखा. अब यह खडा नहीं होगा."

"अरे क्या बात करते हो. इसने अभी लडकी का कमाल कहां देखा है" ऐसा कहते हुए मैं उस के बगल में करवट ले कर लेट गई ताकि मैं उसको देख सकूं. मैंने उसका लन्ड प्यार से सहलाना शुरू किया और उस से धीमी आवाज में धीरे धीरे किताब बोल बोल कर पढने को कहा.

"मुझे शर्म आती है" वह बोला और अपना मुंह मेरी छातियों में छुपा लिया.

''साले अपना मेरे हाथ में देते हुए शर्म नहीं आ रही क्या'' मैंने उसे ताना मारते हुए कहा. ''ला मैं पढती हूं'' और मैंने उसके हाथ से किताब ले ली. मैंने पन्ने पलट कर वह पन्ना खोला जिस पर मर्द और औरत में मजेदार डायलॉग थे. फिर उसको भी मेरे साथ किताब पकडने को बोल कर कहा ''तू लडके वाला पढ और मैं लडकी वाला पढती हूं.''

मैंने पहले पढा 'अरे राजा मेरी चूचियों का रस तो बहुत पी लिया अब अपना बनाना शेक भी तो टेस्ट कराओ'.

'अभी लो रानी पर मैं डरता हूं . इसलिए कि मेरा लन्ड बहुत बडा है तुम्हारी नाजुक चूत में कैसे जाएगा' और हम दोनों मुस्करा दिए क्योंकि यहां हालात बिल्कुल ही उल्टे थे. वह फिर शर्मा गया लेकिन इस थोडी सी ही पढाई से उसके लन्ड में जान भर गई और वह तन कर करीब ६'' लम्बा और डेढ इन्च मोटा हो गया था. मैंने किताब उसके हाथ से ले ली और बोली ''अब किताब की कोई जरूरत नहीं. देख तेरा फिर से खडा हो गया है. तू बस दिल में ये सोच कि तू किसी की ले रहा है और बाकी मैं तेरी मुठी मारती हूं.''

मैंने उसकी मुठ मारनी शुरू की और वह मजा लेने लगा. बीच बीच में वह सिसकारियां भी भरता. एकाएक उसने चूतड उठा कर लन्ड ऊपर की ओर ठेला और बोला ''बस दीदी'' और उसके लन्ड ने गाढा पानी फेंक दिया जो मेरी हथेली में सन गया. मैं उसके रस को उसी के लन्ड पर लगाते हुए उसके लन्ड को हौले हौले सहलाती रही और पूछा ''क्यों मजा आया.''

''सच दीदी बहुत मजा आया.''

''अच्छा यह बता कि खयालों में किसकी ली''

''दीदी अभी शर्म लगती है बाद में बताऊंगा'' वह बोला और अपना मुंह तकिए में छुपा लिया.

''चल अब सो जा नींद भी अच्छी आएगी'' मैने कहा. और आगे से जब ये सब करना हो तो दरवाजा बन्द कर लिया कर.''

वह मजाक में बोला ''अब क्या करना है दरवाजा बन्द करके पत्ते तो तुमने देख ही लिए.''

''अच्छा शैतान कहीं के'' मैंने मुस्करा कर कहा. मैंने उसके गाल पर हल्की सी चपत जमा दी और हौले से उसके होठों को चूम लिया. मैं तो एक कस कर किस लेना चाहती थी लेकिन उसे भविष्य के लिए छोड दिया और उठ कर कमरे से बाहर आ गई. अपनी सलवार कमीज उतार कर नाईटी पहनने लगी तो देखा कि मेरी पैन्टी बुरी तरह से भीगी हुई है. अमित के लन्ड का पानी निकालते निकालते मेरी चूत ने भी पानी छोड दिया था. अपना हाथ पैन्टी में डाल कर अपनी चूत को सहलाने लगी. उंगलियों का स्पर्श पाकर मेरी चूत फिर से सिसकने लगी और मेरा हाथ पूरा का पूरा गीला हो गया. चूत की आग बुझाने का कोई उपाय नहीं था सिवाय अपनी ही उंगली के.मैं बिस्तर पर लेट गई.

अमित के लन्ड के साथ खेलने से मैं काफी उत्तेजित हो गई थी और अपनी कामाग्नि शान्त करने के लिए अपनी बीच वाली उंगली को बुर में जड तक घुसा दिया. तकिए को अपने सीने से कस कर भींच लिया मानो अपने यार को सीने से लगाया हुआ हो. जांघों के बीच दूसरे तकिए को दबा कर घपाघप उंगली चूत के अन्दर बाहर करने लगी. आंखें बन्द करके अमित के लन्ड को याद करते हुए अपनी चूत को अपनी उंगलियों से मथ दिया. इतनी मस्ती चढी हुई थी कि बस पूछो मत. जी कर रहा था कि अभी जा कर अपनी चूत में अमित का लन्ड डलवा लूं. उंगली से चूत की प्यास और

बढ गई थी. इसलिए उंगली निकाल कर तकिए को चूत के ऊपर दबा कर पकडा और औन्धे मुंह लेट कर धका धक धक्के लगाने लगी. जैसे जैसे मेरी कामोत्तेजना बढती गई धक्कों की रफ्तार भी बढती गई. आखिर मेरी चूत ने पानी छोडा और मैं वैसे ही तकिए को जांघों में दबाए सो गई.

सुबह उठी तो पूरा बदन अनबुझी प्यास की वजह से सुलग रहा था. लाख रगड लो तकिए पर लेकिन चूत में लन्ड घुस कर जो मजा देता है उसका कहना ही क्या. बिस्तर पर पडी पडी मैं सोचती रही कि अमित के कुंवारे लन्ड को कैसे अपनी चूत का रास्ता दिखाया जाए. फिर उठ कर तैयार हुई . अमित भी उठ कर स्कूल जाने के लिए तैयार हो गया था. नाश्ते की टेबल पर हम दोनों आमने सामने बैठे. नजरें मिलते ही रात की याद ताजा हो गई और दोनों मुस्करा दिए. अमित मुझसे कुछ शर्मा रहा था कि कहीं मैं उसे छेड ना दूं. मुझे लगा कि अगर अभी कुछ बोलुंगी तो कहीं वह बिदक न जाए. इसलिए चाहते हुए भी मैं कुछ नहीं बोली.

चलते समय मैंने कहा "चलो आज तुम्हें अपने स्कूटर पर स्कूल छोड दूं". वह फौरन तैयार हो गया और मेरे पीछे बैठ गया. वह थोडा सकुचाता हुआ मुझसे अलग होकर बैठा था. उसके हाथ पीछे स्टेपनी को पकडे हुए थे. मैंने स्पीड से स्कूटर आगे बढाया तो उसका बैलेन्स बिगड गया और संभलने के लिए उसने मेरी कमर पकड ली. मैं बोली "संभल कर कस के पकड ले. शर्माता क्यों है."

"अच्छा दीदी" कहते हुए उसने मुझे कस कर कमर से पकड लिया साथ ही मुझसे चिपक गया. उसका लन्ड कडा हो गया था और वह अपनी जांघों के बीच मेरे चूतड जकडे हुए था.

"क्या रात वाली की याद आ रही है" मैने पूछा.

''दीदी रात की तो बात ही मत करो. कहीं ऐसा ना हो कि मैं स्कूल में भी शुरू हो जाऊं.''

''अच्छा तो बहुत मजा आया था रात को.''

''हां दीदी इतना मजा जिन्दगी में कभी नहीं आया. काश कल की रात खत्म ही नहीं होती. तुम्हारे जाने के बाद फिर मुझे जोश चढा था लेकिन तुम्हारे हाथ से मजा लेने में जो बात थी वो कहां. ऐसे ही सो गया.''

''तो मुझे बुला लिया होता. अब तो हम तुम दोस्त हैं एक दूसरे के काम तो आ ही सकते हैं.''

''तो फिर आज रात का प्रोग्राम पक्का''.

''शैतान कहीं के केवल अपने ही बारे में सोचता है कभी ये भी नहीं पूछा कि मेरी हालत कैसी है. मुझे तो किसी चीज की जरूरत नहीं. चल मैं आज नहीं आती तेरे पास.''

''अरे आप तो नाराज हो गई दीदी. आप जैसा बोलोगी वैसा ही करूंगा. मैं तो ठहरा अनाडी आप ही को मुझे सब सिखाना होगा''

तब तक उसका स्कूल आ गया था. मैने स्कूटर रोक दिया. उतरने के बाद वह खडे खडे मुझे देखने लगा पर मैं उस पर नजर डाले बगैर आगे बढ गई. अपने स्कूटर के शीशे में देखा कि वो मायूस सा अपने स्कूल में जा रहा था. मैं मन ही मन बहुत खुश हुई कि चलो अपने दिल की बात का इशारा तो उसे दे ही दिया.

शाम में मैं आफिस से चार बजे ही घर वापस आ गई.अमित जब साढे चार बजे आया तो मुझे घर पर ही देख कर हैरान हो गया. मुझे लेटा देख कर पूछा ''आपकी तबियत तो ठीक है ना''.

मैंने कहा "हां ठीक ही समझो. तुम बताओ कुछ होम वर्क मिला है क्या."

"दीदी कल तो शनिवार है और छुट्टी है. वैसे कल रात का काफी होम वर्क बचा हुआ है."

मैंने हंसी दबाते हुए कहा "क्यों पूरा तो करवा दिया था. वैसे भी तुम को यह सब नहीं करना चाहिए. सेहत पर असर पडेगा. कोई लडकी पटा लो आजकल तो सुना है कि लडकियां भी इस काम में काफी इन्टरेस्टेड रहती हैं."

"आप तो ऐसे कह रही हैं वह मेरे लिए अपनी सलवार नीचे और कमीज ऊपर कर के तैयार हैं कि आओ पैन्ट खोल कर मेरी ले लो."

"नहीं ऐसी बात नहीं है. लडकी पटानी आनी चाहिए" मैंने जवाब दिया.

फिर उठ कर मैं चाय नाश्ता बनाने लगी. मन ही मन मैं प्लान बना रही थी कि कैसे इस कुंवारे लन्ड को लडकी पटा कर चोदना सिखाऊं.

खाने की टेबल पर मैंने फिर पूछा "अच्छा यह बता किस लडकी से तेरी गहरी दोस्ती है."

"सुधा से" वह बोला.

"कहां तक."

"बस खूब बातें करते हैं और स्कूल में साथ साथ बैठते हैं."

मैंने सीधे चोट की "कभी उसकी लेने का मन करता है."

वह शर्मा गया और बोला "दीदी कैसी बात करती हैं आप".

''इसमें शर्माने की क्या बात है. मुट्ठी तो तू रोज मारता ही है ख्यालों में कभी मुधा की ली कि नहीं. सच सच बताना.''

''पर ख्यालों में लेने से क्या होता है'' वह शर्माते हुए बोला.

''तो इस का मतलब है कि तू उसकी असल में लेना चाहता है'' मैंने कहा.

''उससे ज्यादा तो और एक है जिसकी लेना चाहता हूं जो बहुत ही अच्छी लगती है''.

''जिसकी कल रात ख्यालों में ली'' मैंने मुस्कराते हुए पूछा.

उसने सिर हिला कर हां तो कर दी पर मेरे बार बार पूछने के बावजूद उसका नाम नहीं बताया. इतना जरूर कहा कि उसका 'मिशन चुदाई' पूरा होने पर वह सबसे पहले मुझे ही बताएगा. मैंने ज्यादा नहीं पूछा क्योंकि मेरी चूत फिर गीली होने लगी थी. मैं चाहती थी कि इस से पहले मेरी चूत लन्ड के लिए बेचैन हो वह खुद मेरी चूत में अपना लन्ड घुसाने को गिडगिडाए. मैं चाहती थी कि लन्ड हाथ में लेकर वह मेरी मिन्नतें करे कि बस एक बार चोदने दो. मेरा दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा था इसलिए बोली ''अच्छा चल कपडे बदल कर आ और मैं भी बदलती हूं.''

वह अपनी स्कूल यूनिफार्म बदलने गया और मैंने भी अपने प्लान के मुताबिक अपनी सलवार कमीज उतार दी. फिर ब्रा पैन्टी भी उतार दी क्योंकि पटाने के मदमस्त मौके पर ये रास्ते में दिक्कत कर सकते हैं. हमारा देशी पेटीकोट और ढीला ब्लाउज ही ऐसे मौकों पर सही रहते हैं. जब बिस्तर पर लेटो तो पेटीकोट अपने आप आसानी से घुटनों तक आ जाता है और थोडी सी ही कोशिश से और ऊपर आ जाता है. जहां तक ढीले ब्लाउज का सवाल है तो थोडा झुको तो

सारा जोबन छलक कर बाहर को आ जाता है. बस यही सोच कर मैने पेटीकोट ब्लाउज पहन लिया.

वह सिर्फ पाजामा और बनियान पहन कर आ गया. उसका गोरा चिट्टा चिकना चिकना बदन मद मस्त करने वाला लग रहा था. एकाएक मुझे एक आइडिया आया. मैं बोली " मेरी कमर में थोडा दद हो रहा है जरा आयोडेक्स लगा दे".

यह बिस्तर पर लेटने का परफेक्ट बहाना था. इसलिए मैं बिस्तर पर पेट के बल लेट गई. मैंने अपना पेटीकोट थोडा ढीला बांधा था इस लिए लेटते ही नीचे खिसक गया और मेरे चूतडों के बीच की दरार दिखाई देने लगी. लेटते ही मैंने अपनी बांहें भी ऊपर की जिससे मेरा ब्लाउज ऊपर चढ गया और उसे मालिश करने के लिए ज्यादा जगह मिल गई. वह मेरे पास बैठ कर मेरी कमर पर आयेडेक्स लगा कर धीरे धीरे मलने लगा. उसका स्पर्श बडा ही सेक्सी था और मेरे पूरे बदन में सिहरन सी दौड गई. थोडी देर बाद मैंने करवट ले कर अमित की ओर मुंह कर लिया और उसकी जांघ पर हाथ रख कर ठीक से बैठने को कहा. करवट लेने से मेरी चूचियां ब्लाउज के ऊपर से आधी से ज्यादा बाहर निकल आईं थी. उसकी जांघ पर हाथ रखे रखे ही मैंने पहले की बात आगे बढाई "तुझे पता है कि लडकी को कैसे पटाया जाता है".

"अरे दीदी मैं तो अभी बच्चा हूं. ये सब आप बताएंगी तब ना मालूम होगा मुझे."

आयोडेक्स मलने के दौरान मेरा ब्लाउज थोडा ऊपर खिंच गया था जिसकी वजह से मेरी गोलाईयां नीचे से भी झांक रही थीं. मैंने देखा कि वह एक टक मेरी चूचियों को घूर रहा था. उसके कहने के अन्दाज से यह भी मालूम हो गया कि वह इस सिलसिले में और बात करने को उत्सुक था.

''अरे यार लडकी पटाने के लिए पहले ऊपर ऊपर से हाथ फेरना पडता है ये मालूम करने के लिए कि वो बुरा तो नहीं मानेगी.''

''पर कैसे दीदी'' उसने पूछा और टांगें ऊपर कर के मेरे पास बिस्तर पर ली. मैने भी थोडा और खिसक कर उसके लिए जगह बना दी ताकि वह आराम से बैठ जाए.

''देख जब उस से हाथ मिलाओ तो जरा ज्यादा देर तक उनको पकड कर रखो देखो कि वो कब तक नहीं छुडाती. जब पीछो से उसकी आंखें बन्द कर के पूछो कि मैं कौन हूं तो अपना केला धीरे से उसके पीछे लगा दो. जब कान में कुछ बोलो तो अपना गाल उसके गाल पर मलो. वो अगर इन सब बातों का बुरा नहीं मानती तब आगे की सोचो.''

अमित बडे ध्यान से यह सब सुन रहा था. वह बोला ''सुधा तो इन सब का कोई बुरा नहीं मानती जबकि मैंने कभी ये सब सोच कर नहीं किया. कभी कभी तो मैं उसकी कमर में भी हाथ डाल देता हूं पर फिर भी वो कुछ नहीं कहती.''

''तब तो यार छोकरी तैयार है. अब तू उसके साथ दूसरा खेल शुरू कर'' मैंने कहा.

''कौन सा''.

''बातों वाला. यानि कभी उसके बन्तरों की तारीफ करके देख क्या कहती है. अगर मुस्करा के बुरा मानती है तो समझ ले कि पटाने में ज्यादा देर नहीं लगेगी.''

''पर दीदी उसके तो बहुत छोटे छोटे बन्तरे हैं तारीफ के काबिल तो आपके हैं'' वह बोला और मुझसे बचने को तकिए में मुंह छुपा लिया. बस मुझे तो इसी घडी का तो इन्तजार था. मैंने उसका चेहरा पकड कर अपनी ओर घुमाते हुए कहा

''मैं तुझे लडकी पटाना सिखा रही हूं और तू मुझ पर ही नजरें लगाए हुए है.''

''नहीं दीदी सच में आपकी चूचियां बहुत प्यारी हैं बहुत दिल करता है'' और उसने मेरी कमर में एक बांह डाल दी.

''अरे क्या करने को दिल करता है ये तो बता'' मैं इठलाती हुई बोली.

''इनको सहलाने का और इनका रस पीने का.'' अब तक उसके हौसले बुलन्द होगए थे और उसे यकीन हो गया था कि मैं उसकी इन सब बातों का बुरा नहीं मानूंगी.

''तो कल रात बोलता. तेरी मुठ मारते हुए इन को तेरे मुंह में लगा देती. मेरा कुछ घिस तो नहीं जाता. चल आज जब तेरी मुठ मारूंगी तो उस वक्त अपनी इच्छा पूरी कर लेना'' मैं बोली और पाजामे में हाथ डालकर उसका लन्ड पकड लिया जो पूरी तरह से तन गया था. ''अरे ये तो अभी से तैयार है''.

वह आगे को झुका और अपना चेहरा मेरे सीने में छुपा लिया. मैंने उसको बांहों में भरकर अपने करीब लिटा कर कस के दबा लिया. ऐसा करने से मेरी चूत में मेरा लन्ड दबने लगा. उसने भी मेरी गर्दन में अपनी एक बांह डाल कर मुझे भींच लिया. अचानक मुझे अहसास हुआ कि वो तो बिना ब्लाउज ऊपर किए मेरी आई चूची चूस रहा है. मैंने थोडी देर रूक कर यह पक्का किया कि वास्तव में वह ऐसा कर रहा है फिर उस से कहा ''अरे ये क्या कर रहा है. मेरा ब्लाउज खराब हो जाएगा.''

उसने झट मेरा ब्लाउज ऊपर किया निप्पल मुंह में डाला और चूसना शुरू कर दिया. मैं उसकी हिम्मत की दाद दिए बगैर न्हीं रह सकी. वह मेरे साथ पूरी तरह से आजाद हो

गया था. अब यह मेरे ऊपर था कि मैं उसे कितनी आजादी देती हूं. अगर मैं उसे आगे करने देती हूं तो इसका मतलब है कि मैं उस से ज्यादा बेकरार हूं चोदवाने के लिए और अगर उसे मना करती हूं तो उसका मूड खराब होगा और हो सकता है कि इसके बाद वो मुझसे बात भी ना करे. इसलिए मैंने बीच का रास्ता लिया और थोडे बनावटी गुस्से के साथ बोली "अरे ये क्या तू तो जबरदस्ती करने लगा. तोरे को शर्म नहीं आती क्या."

"दीदी आपने तो कहा था कि मेरा ब्लाउज मत खराब कर. रस पीने को तो मना नहीं किया था. इसीलिए मैंने ब्लाउज ऊपर उठा दिया" वह बोला. उसकी नजर मेरी बाईं चूची पर ही टिकी थी जो कि ब्लाउज से बाहर निकली हुई थी. वह और नहीं रोक सका अपने को और फिर से मेरी चूची मुंह में ले ली और चूसना शुरू कर दिया. मुझे भी मजा आ रहा था और मेरी वासना का ज्वार बढता जा रहा था. कुछ देर बाद मैंने जबरदस्ती उसका मुंह बाईं चूची पर से हटाया और दाईं चूची की तरफ लाते हुए बोली "अरे साले ये दो होते हैं और दानों में बराबर का मजा आता है".

उसने दायीं चूची पर से भी ब्लाउज ऊपर करके निप्पल मुंह में लेकर चुभलाना शुरू कर दिया. साथ साथ एक हाथ से वो मेरी बाईं चूची को सहलाने लगा. कुछ देर बाद मेरी भी इच्छा हुई कि उसके मतवाले होठों को चूमूं और उनका रस पिऊं. मैने धीरे से पूछा "कभी किसी की किस्सी तो नहीं ली होगी अब तक".

उसने ना में सर हिलाया और बोला "सुना है दीदी इसमें भी बहुत मजा आता है".

"बिल्कुल ठीक सुना है पर किस्सी ठीक से करनी आनी चाहिए."

''कैसे'' उसने उत्सुकता से पूछा. उसने मेरी चूची पर से मुंह हटा लिया था. अब मेरी दोनों चूचियां ब्लाउज से आजाद खुली हवा में झूम रही थी लेकिन मैने उनको छेपाने की कोशिश नहीं की. बल्कि अपना मुंह उसके मुंह के पास ले जा कर अपने होंठ उसके होठों पर रख दिए. फिर हौले से अपने होठों से उसके होठों को खोलकर उन्हें प्यार से चूसना शुरू कर दिया. मैं करीब दो मिनट तक उसके होठ चूसती रही और फिर बोली ''ऐसे''.

वह बहुत ही उत्तेजित हो गया. इससे पहले कि मैं उसे बोलूं कि एक बार वो भी किस करने की प्रैक्टिस कर ले वह खुद ही बोला ''दीदी अब मैं एक बार करूं आपको''.

''कर ले'' मैं मुस्कराते हुए बोली. अमित ने मेरी ही स्टाईल में मुझे किस किया. मेरे होठों को चूसते समय उसका सीना मेरी छाती पर आ कर मेरी चूचियों पर दबाव डाल रहा था जिससे मेरी मस्ती दुगुनी हो गई. उसके चुम्बन खत्म करने के बाद मैंने उसे अपने ऊपर से हटाया और बांहों में लेकर फिर से उसके होठ चूसने शुरू कर दिए. इस बार मैं थोडा ज्यादा जोश से उसे चूम रही थी. उसने मेरी एक चूची पकड ली थी और उसे कस कस कर मसल रहा था और सहला रहा था. मैंने कमर आगे कर के अपनी चूत उसके लन्ड पर दबाई. लन्ड तो एकदम तन कर लकडी के कुन्दे जैसा कडा हो गया था. चुदवाने का यह एक दम सही मौका था. लेकिन मैं चाहती थी कि वो मुझे चोदने के लिए भीख मांगे और मैं उस पर एहसान कर के उसे चोदने की इजाजत दूं.

मैं बोली ''चल अब बहुत हो गया. अब ला तेरी मुठ मार दूं.''

''दीदी एक रिक्वेस्ट करूं''.

''क्या'' मैं बोली. ''लेकिन रिक्वेस्ट ऐसी होनी चाहिए कि मुझे बुरा नहीं लगे.''

ऐसा लग रहा था कि वो मेरी बात ही नहीं सुन रहा था और बोलता रहा ''दीदी मैंने सुना है कि अन्दर डालने में बहुत मजा आता है डालने वाले को और डलवाने वाले को भी. मैं भी एक बार अन्दर डालना चाहता हूं. मैं आपकी लूंगा नहीं सिर्फ अन्दर डालने दीजिए''.

''अरे तो फिर लेने में क्या बचा''.

''दीदी बस अन्दर डाल कर देखूंगा कि कैसा लगता है प्लीज दीदी''.

मैंने उस पर अहसान दिखाते हुए कहा ''ठीक है लेकिन एक शर्त पर. तुम्हें बताना होगा कि अक्सर खयालों में किस की लेते हो''.

मैं पलंग पर टांगें फैला कर चित्त लेट गई और उसे अपने घुटनों के बल मेरी बैठने को कहा. फिर मैंने उसके पाजामे का नाडा खोल कर पाजामा नीचे कर दिया. उसका लन्ड तन कर खडा था. मैने उसकी बांह पकड कर कोहनी अपनी दोनो तरफ रख कर अपन ऊपर लिटा लिया जिससे कि उसका पूरा वजन उसके घुटनों और कोहनियों पर आ गया. वह अब और नहीं रूक सकता था और उसने मेरी एक चूचि को मुंह में भर लिया जो कि पहले से ही ब्लाउज के बाहर थी. मैं उसे थोडा और छेडना चाहतीी थी.

''सुन ब्लाउज ऊपर होने से चुभ रहा है. इसे नीचे कर दे.''

''नहीं दीदी मैं इसे खोल देता हूं'' वह बोला और मेरे ब्लाउज के बटन खोल दिए. अब मेरी दोनों चूचियां आजाद थीं और उसने लपक कर दोनों को अपने कब्जे में कर

लिया. एक चूची तो उसने मुंह में लेकर चुभलाना शुरू कर दिया जब कि दूसरी चूची को वह हाथ में लेकर मसल रहा था. इधर वह मेरी चूचियों का मजा ले रहा था उधर मैंने अपना पेटीकोट ऊपर कर के उसके लन्ड को हाथ से पकड के अपनी गीली चूत पर रगडना शुरू कर दिया. फिर लन्ड को चूत के मुंह पर रख कर बोली "ले अब तेरे तीर को निशाने पर रख दिया है. पर अन्दर आने से पहले उसका नाम बता जिसकी तू बहुत दिल से लेना चाहता है और खयालों में भी उसी को याद करके मुठ मारता है."

वह मेरी चूचियों को पकड कर मेरे ऊपर झुक गया और अपने होंठ मेरे होठों पर रख दिए. मैने भी अपने होंठ खोल कर उसके होठों को चूसना शुरू कर दिया. चुम्बन के बाद मैंने पूछा "तो बता कौन है वो तेरे सपनों की रानी".

"दीदी आप बुरा मत मानना. मैंने आजतक जितनी भी मुठ मारी है सिर्फ आपको खयालों में रख कर. कितने दिनों से मैं आपकी चूत में अपना लन्ड डालना चाहता था. आज मेरे दिल की इच्छा पूरी हुई" वह शर्माते हुए बोला और अपना मुंह मेरी गर्दन और कन्धे में छुपा लिया. फिर धीरे से उसने अपना लन्ड मेरी चूत में घुसा कर चुपचाप लेट गया अपने वादे के मुताबिक.

"अरे तू मुझे इतना चाहता है. मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि घर में ही एक लन्ड मेरे लिए तडप रहा है. पहले बोला होता तो पहले ही तुझे मौका दे देती." और मैंने धीरे धीरे उसकी पीठ सहलानी शुरू कर दी. बीच बीच में मैं उसको चूतडों को भी दबा देती थी.

"और मेरी किस्मत देखो कि मेरा लन्ड आपकी चूत में पडा है और मैं आपको चोद भी नहीं सकता. पर फिर भी लग रहा है कि मैं स्वर्ग में हूं". वह अब खुले तौर पर लन्ड चूत बोल रहा था पर मैंने उसका बुरा नहीं माना. "अच्छा अब

वादे के मुताबिक मैं बाहर निकालता हूं" कह कर उसने लन्ड बाहर निकालने को तैयार होने लगा.

मैं तो यह सोच रही थी कि वह अब चूत में लन्ड का धक्का लगाना शुरू करेगा लेकिन यह तो ठीक उसका उल्टा कर रहा था. मुझे उसपर बहुत दया आई. साथ ही यह भी बहुत अच्छा लगा कि वो वादे का पक्का है. अब मेरा फर्ज बनता था कि मैं उसकी वफादारी का ईनाम अपनी चूत को चुदवा कर दूं. इस लिए उसी की बोली में मैंने कहा "अरे यार. तूने मेरी चूत की अपने खयालों में इतनी पूजा की है. अब अगर मैं तुझसे नहीं चुदवाऊंगी तो भगवान काम देव मुझे श्राप दे देंगे. इसलिए चल यार अब कर ले चुदाई मेरी चूत की."

"सच दीदी" और फौरन उसने मेरी चूत में धकाधक लन्ड पेलना शुरू कर दिया कि कहीं मैं अपना इरादा ना बदल दूं.

"बहुत किस्मत वाला है तू" उसके लन्ड की चुदाई का मजा लेती हुई मैं बोली.

"क्यों" उसने अपने लन्ड की रफ्तार कम किए बगैर ही पूछा.

"अरे पहली चुदाई तू अपनी मन पसन्द चूत की कर रहा है".

"इसी लिए तो मुझे अपनी किस्मत पर विश्वास नहीं हो रहा है. लगता है जैसे सपने में चोद रहा हूं" वह बोला और फिर से मेरी एक चूची को मुंह में दबा कर चूसना शुरू कर दिया. लेकिन उसके धक्कों की रफ्तार कम नहीं हुई.

मैं भी काफी दिनों के बाद चुदवा रही थी. इस लिए मैं भी इस चुदाई का पूरा मजा ले रही थी. वह एक पल को रूका

और फिर लन्ड को ठीक से गहराई तक पेल कर और जोर जोर से चोदना शुरू कर दिया. शायद वह झडने वाला था. मैं भी सातवें आसमान पर पहुंच गई थी और नीचे से कमर उठा उठा कर उसके धक्कों का जवाब दे रही थी. उसने मेरी चूची छोड कर मेरे होठों को मुंह में ले लिया जो कि मुझे हमेशा अच्छा लगता था. मुझे चूमते हुए उसने कस कस कर धक्के दिए और 'हाय आशा मेरी जान' कहते हुए झड कर मेरे ऊपर चिपक कर पड गया. मैंने भी नीचे से दो चार धक्के दिए और 'हाय मेरे राजा' कहते हुए झड गई. चुदाई के जोश ने हम दोनों को निढाल कर दिया था. हम दोनों कुछ देर तक यूं ही एक दूसरे से चिपक कर पडे रहे. कुछ देर बाद जब मुझे होश आया तो मैंने उसे जगाया और कहा "क्यों मजा आया मेरी चूत के पुजारी को".

उसका लन्ड अभी भी मेरी चूत में ही था. उसने मुझे कस कर अपनी बांहों में जकड कर अपने लन्ड को मेरी चूत में और कस कर दबा दिया और बोला "बहुत मजा आया. यकीन ही नहीं होता कि मैंने आपको चोदा है."

"तो क्या मैंने तेरी मुठ मारी है" मैं हंसते हुए बोली.

"मेरा मतलब यह नहीं था."

"तो क्या था" मैंने उसे छोडते हुए पूछा.

"अब देखो ना दीदी. यह कैसी चुदाई हुई कि चूत भी नहीं देखी और पूरी तरह से चोद भी लिया" वह अफसोस करते हुए बोला.

"चल कोई बात नही. मज्जा तो पूरा लिया ना" मैं बोली.

"अच्छा दीदी एक बात और मानोगी" उस ने पूछा.

"अब और क्या चाहिए" मैंने पूछा.

''दीदी मुझे एक बार और करने दीजिए प्लीज'' वह गिडगिडा कर बोला. ''और इस बार मैं पूरी तसल्ली से आपकी चोदुंगा.''

''जी नहीं आप माफ कीजिए. मुझे अपनी नहीं देनी'' मैने मुस्कराते हुए जवाब दिया.

''प्लीज दीदी सिर्फ एक बार और चुदाने में आपका क्या बिगड जाएगा''. अपनी बात में जोर लाने के लिए उसने अपना लन्ड मेरी चूत में कस कर दबा दिया.

''सिर्फ एक बार'' मैंने जोर दे कर पूछा.

''सिर्फ एक बार. पक्का वादा.''

''सिर्फ एक बार करना है तो बिल्कुल नहीं''.

''क्यों दीदी'' उसने पूछा. अब तक उस का लन्ड मेरी चूत में अपना पूरा रस निचोड कर अपने आप बाहर आ गया था. अब मेरा मौका था उसे फिर से झटका देने का.

''अगर एक बार बोलूंगी तो अभी एक घन्टे बाद ही फिर से मेरी चुदाई कर लेगा क्यों है ना'' मैंने पूछा.

''बिल्कुल'' वह जोर दे कर बोला.

''और फिर अगले पांच दिन क्या करेगा. बस मेरी देख कर मुठ मारेगा क्या. इस लिए अगर सिर्फ एक बार मेरी लेनी है तो मुझे तो तू माफ ही कर'' मैंने जवाब दिया और मुस्कराते हुए उस के चेहरे के हाव भाव देखने लगी.

उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ. जब मेरी बातों का मतलब उसे समझ आया तो उसके मुरझाए हुए लन्ड में थोडी जान आ गई और उसे मेरी चूत पर रगडते हुए बोला ''ओह

दीदी तुम तो वाकई ग्रेट हो" और मुझे कस कर बांहों में जकड लिया.